भारतीय जनता पार्टी

(केंद्रीय कार्यालय)

6A, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली

09 दिसंबर 2025, मंगलवार

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने पर राज्य सभा में विशेष चर्चा के दौरान दिए गए संबोधन के मुख्य बिंदु

वंदे मातरम् राष्ट्र के प्रति समर्पण का माध्यम आजादी के आंदोलन में भी था, आज भी है और 2047 में विकसित भारत के निर्माण के समय भी रहेगा

****

वंदे मातरम्, मां भारती के प्रति समर्पण, भक्ति और कर्तव्य के भाव जागृत करने वाली एक अमर कृति है

****

'वंदे मातरम्' पर चर्चा से आने वाली पीढ़ियाँ इसके महत्व को समझेंगी, और यह राष्ट्र के पुनर्निर्माण का आधार भी बनेगा

****

अगर जवाहरलाल नेहरू ने वंदे मातरम् के दो टुकड़े कर तुष्टीकरण की शुरुआत न की होती, तो देश का विभाजन भी न होता

****

जिस वंदे मातरम् को गांधी जी ने 'शुद्धतम आत्मा से निकला हुआ गान' कहा, उसी गीत को कांग्रेस ने दो हिस्सों में बाँट दिया

****

वंदे मातरम् के 100 वर्ष पर इंदिरा गांधी ने 'वंदे मातरम्' बोलने वाले लोगों को जेल में डाल दिया और आपातकाल लगाया

****

जिस कांग्रेस पार्टी के अधिवेशनों की शुरुआत गुरुदेव टैगोर वन्दे मातरम् गाकर कराते थे, उसी पर जब लोकसभा में चर्चा हुई, तब गांधी परिवार के सदस्य नदारद थे

****

जवाहरलाल नेहरू से लेकर आज के कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व तक, वन्दे मातरम् का अपमान कांग्रेस के खून में रहा है

****

इस्लामिक व ब्रिटिश आक्रमण से हमारी संस्कृति व इतिहास क्षीण-शीर्ण हुआ, उस वक्त बंकिम बाबू ने वंदे मातरम् की रचना कर, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को पुनर्स्थापित किया

****

'वंदे मातरम्' आज भी स्वतंत्रता, संस्कृति और राष्ट्रभक्ति का सबसे शक्तिशाली जयघोष है

****

'वंदे मातरम्' आजादी के आंदोलन में स्वतंत्रता का नारा बना और अब विकसित व महान भारत के निर्माण का भी प्रेरक मंत्र बनेगा

****

यह हम सभी का कर्तव्य है कि हर बच्चे, युवा व किशोर के मन में वंदे मातरम् के जयघोष के साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण और बलिदान के संस्कार जगाएँ

****

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने आज मंगलवार को राज्यसभा में राष्ट्रीय गीत - 'वंदे मातरम' पर चर्चा में सदन को संबोधित किया। श्री शाह ने कहा कि यह केवल देशभक्ति का गीत नहीं, बल्कि भारत माता के प्रति भक्ति, समर्पण और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रतीक है। स्वतंत्रता संग्राम में वंदे मातरम ने क्रांतिकारियों और सैनिकों को प्रेरित किया और इसे संविधान सभा द्वारा राष्ट्रगीत के रूप में सम्मान दिया गया। उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि वे वंदे मातरम की महिमा को राजनीतिक रूप से कम करने की कोशिश करते हैं। केंद्रीय गृहमंत्री ने बताया कि वंदे मातरम के 150वें वर्ष के उपलक्ष्य में देशभर में विशेष कार्यक्रम, डाक टिकट, सिक्के, प्रदर्शनी और सामूहिक गान आयोजित किए जा रहे हैं। वंदे मातरम आज भी राष्ट्रनिर्माण और युवा पीढ़ी में राष्ट्रभक्ति जागृत करने का माध्यम है।

श्री शाह ने कहा कि सदन में जब वंदे मातरम पर चर्चा हो रही थी, तब कुछ सदस्यों ने यह प्रश्न उठाया कि आखिर इस विषय पर चर्चा की आवश्यकता क्यों है। वंदे मातरम पर चर्चा और उसके प्रति समर्पण की आवश्यकता आज ही नहीं, आज़ादी के आंदोलन के समय भी थी और 2047 में विकसित भारत के निर्माण के दौरान भी रहेगी। यह अमर रचना मातृभूमि के प्रति भक्ति, समर्पण और कर्तव्यबोध जगाने वाली कृति है। जिन लोगों को आज वंदे मातरम पर चर्चा की आवश्यकता समझ नहीं आ रही, उन्हें अपनी समझ पर पुनः विचार करने की जरूरत है। कुछ लोगों को लगता है कि बंगाल में चुनाव आने वाले हैं, इसलिए वंदे मातरम की चर्चा हो रही है। वे इसकी महिमा को चुनाव से जोड़कर कम करना चाहते हैं। यह सही है कि आदरणीय बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय जी बंगाल में जन्मे, गीत वहीं लिखा गया और आनंद मठ की पृष्ठभूमि भी बंगाल की थी, लेकिन वंदे मातरम का उदय केवल बंगाल तक सीमित नहीं रहा। यह पूरे देश और दुनिया भर में स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणा बना।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि आज भी सीमा पर देश की रक्षा करते हुए शहीद होने वाले जवानों के होंठों पर वंदे मातरम ही रहता है। पुलिस और सुरक्षा बलों के जवान भी अपने सर्वोच्च बलिदान के समय इसी मंत्र को स्मरण करते हैं। आज़ादी के आंदोलन के दौरान वंदे मातरम गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का स्वर बन चुका था और अनेक क्रांतिकारियों को यह प्रेरणा देता था कि अगले जन्म में भी भारत में ही जन्म लेकर राष्ट्र की सेवा करें। यह गीत पीढ़ियों से लोगों को अपनी संस्कृति के मार्ग पर चलने और राष्ट्र के प्रति समर्पण की प्रेरणा देता रहा है। संसद के दोनों सदनों में होने वाली इस चर्चा से बच्चे, किशोर, युवा और आने वाली पीढ़ियां वंदे मातरम के महत्व को समझ सकेंगी और राष्ट्र पुनर्निर्माण में इसे प्रेरणा स्वरूप अपनाएंगी। 7 नवंबर 1875, कार्तिक शुक्ल नवमी के दिन वंदे मातरम का प्रथम सार्वजनिक प्रकाशन हुआ, जिसे अक्षय नवमी या जगद्धात्री पूजा के रूप में जाना जाता है। प्रारंभ में इसे एक उत्कृष्ट साहित्यिक रचना माना गया लेकिन धीरे-धीरे यह देशभक्ति, त्याग और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बनकर आज़ादी के आंदोलन का मार्गदर्शक बना। केंद्रीय गृह मंत्री ने रचना की पृष्ठभूमि को भी महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि सदियों तक इस्लामिक आक्रमणों का विरोध करने वाली संस्कृति और फिर अंग्रेजों द्वारा थोपे गए नए जीवन-व्यवहार के बीच, बंकिम बाबू ने इस गीत के माध्यम से भारत की मूल सभ्यता, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और मातृभूमि की उपासना की परंपरा को पुनः स्थापित किया।

श्री शाह ने कहा कि उस समय न सोशल मीडिया था, न प्रचार के साधन। उल्टा अंग्रेजी शासन वंदे मातरम बोलने पर प्रतिबंध लगाता था, कोड़े मारता था, जेल में डालता था। फिर भी यह गीत सब प्रतिबंधों को पार करते हुए कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैल गया और भारत की संस्कृति के प्रति श्रद्धा रखने वाले लोगों के लिए पुनर्जागरण का मंत्र बन गया। गुलामी के कालखंड में मंदिर, विश्वविद्यालय, कला केंद्र, कृषि व्यवस्थाएं और शिक्षा प्रणालियां नष्ट की गई, लेकिन भारतीय संस्कृति की आत्मा को कोई कमजोर नहीं कर पाया। आवश्यकता केवल उस भावना को जागृत करने की थी, और वही कार्य वंदे मातरम ने किया। यह गीत देशभर में फैलता हुआ अंडमान-निकोबार की जेलों तक पहुँचा, जिसे न अंग्रेज रोक पाए न उनके समर्थक। वंदे मातरम ने उस राष्ट्र को पुनर्जीवित किया जिसने अपनी दिव्य शक्ति को भुला दिया था। महर्षि अरविंद ने इसे भारत के पुनर्जन्म का मंत्र कहा और यह भी कहा कि ईश्वर ने देश के लिए आवश्यक इस मंत्र को साकार करने हेतु ही बंकिम बाबू को जन्म दिया। उनका विचार आज़ादी के आंदोलन का नारा बना और पीढ़ियों का प्रेरणा स्रोत भी।

वरिष्ठ भाजपा नेता ने कहा कि हमारा देश दुनिया में अनूठा है। कई देशों की सीमाएं युद्धों, संधियों या अधिनियमों से बनी हैं, लेकिन भारत की सीमाएं हमारी संस्कृति ने तय की हैं। इसी सांस्कृतिक आधार ने भारत को जोड़े रखा और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विचार गुलामी के काल में सबसे पहले बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने जागृत किया। पूरे देश को देखें तो स्पष्ट होता है कि भारत को जोड़ने वाली असली शक्ति हमारी संस्कृति है। यही सांस्कृतिक आधार वह मंत्र है जिसने वंदे मातरम के माध्यम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत किया। जब अंग्रेजों ने वंदे मातरम पर कई प्रतिबंध लगाए, तब बंकिम बाबू ने पत्र में लिखा कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है यदि उनका पूरा साहित्य नदी में बहा दिया जाए, क्योंकि वंदे मातरम अनंत काल तक जीवित रहेगा। यह गीत लोगों के हृदय में स्थान बनाएगा और भारत के पुनर्निर्माण का मंत्र बनेगा। आज यह स्पष्ट दिख रहा है कि बंकिम बाबू के शब्द सत्य साबित हुए हैं। देर से ही सही, आज पूरा राष्ट्र सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना को स्वीकार कर आगे बढ़ रहा है। हम सभी भारत माता की संताने मानते हैं कि यह देश जमीन का टुकड़ा नहीं बल्कि हमारी मां है और उसी भावना की अभिव्यक्ति वंदे मातरम है।

श्री शाह ने कहा कि वंदे मातरम की रचना में भारत माता के स्वरूप का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण किया गया है। इसमें जल, फल और समृद्धि की दायिनी भारत माता का वर्णन है। मन को प्रफुल्लित करने वाली पुष्पों की शोभा भी भारत माता से जोड़ी गई है। इसमें सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के स्वरूप को भारत माता बताया गया है। ज्ञान, समृद्धि और रक्षा की शक्ति भारत माता की कृपा से ही मिल सकती है, इसलिए बार-बार प्रणाम करने की भावना इस गीत में व्यक्त होती है। बंकिम बाबू ने दुर्गा की वीरता, लक्ष्मी की संपन्नता और सरस्वती की मेधा को भारत माता का आशीर्वाद बताया है। यह विचार भले उन्होंने आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले प्रस्तुत किया हो, लेकिन इसकी जड़ें बहुत प्राचीन हैं। रामायण में भगवान श्री राम ने लंका पर विजय के बाद भी मातृभूमि का त्याग नहीं किया और कहा कि माता और मातृभूमि ईश्वर से भी महान होती हैं। आचार्य शंकर और आचार्य चाणक्य ने भी मातृभूमि के महिमा मंडन को सर्वोच्च स्थान दिया और हमारी पहचान को मातृभूमि के साथ जोड़ा। वही हमें भाषा, संस्कृति और जीवन को उन्नत करने का अवसर देती है। गुलामी के घने अंधकार में इस चिर पुरातन भाव को बंकिम बाबू ने पुनर्जीवित किया। वंदे मातरम के उद्‌घोष ने जनमानस में स्वराज की भावना जगाई और गुलामी की मानसिकता को तोड़ने का कार्य किया। महर्षि अरविंद ने वंदे मातरम को गीत नहीं बल्कि भारत की आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक बताया। बताया कि वंदे मातरम शरीर में ऊर्जा जगाता है, भावनाओं और विचारों को शुद्ध करता है और चेतना को जागृत करता है। यह केवल देश प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि भारत माता की दिव्य शक्ति का आह्वान है।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि भारत की मूल सनातन चेतना को जगाने का कार्य वंदे मातरम ने किया और इसी कारण स्वतंत्रता आंदोलन के अधिकांश नेताओं ने इसे संघर्ष का आधार बनाया। कई सेनानी जब फांसी के तख्ते पर जाते थे, तब उनके अंतिम शब्द वंदे मातरम ही होते थे। स्वदेशी आंदोलन का आह्वान हो, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की पुकार हो, राष्ट्रीय शिक्षा का संदेश हो या राष्ट्रभक्ति का उत्साह, हर चरण में इस देश ने वंदे मातरम का उद्‌घोष सुना और महसूस किया। पंजाब के गदर आंदोलन में वंदे मातरम शीर्षक से कई पर्चे बांटे गए। महाराष्ट्र में गणपति और शिवाजी उत्सव के दौरान वंदे मातरम के विशेषांक बेचे और वितरित किए जाते थे। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल अनुवाद किया और हिंद महासागर तक क्रांति की चेतना को जागृत किया। 1907 में कोलकाता में वंदे मातरम नाम से एक अंग्रेजी अखबार शुरू हुआ, जिसके संपादक महर्षि अरविंद थे। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश सरकार ने उसे खतरनाक राष्ट्रवादी पत्र माना और महर्षि अरविंद पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। उन्हें सजा भी हुई और अंत में पत्र पर प्रतिबंध लगा दिया गया। कांग्रेस के अधिवेशनों ने भी वंदे मातरम का सम्मान किया। 1896 में गुरुदेव टैगोर ने इसे पहली बार कांग्रेस अधिवेशन में गाया और 1905 में वाराणसी अधिवेशन में सरला देवी चौधरानी ने पूर्ण वंदे मातरम का गायन किया। 15 अगस्त 1947 को जब देश स्वतंत्र हुआ, तब सुबह पंडित ओमकारनाथ ठाकुर ने सरदार पटेल के आग्रह पर आकाशवाणी से वंदे मातरम का गायन किया। इसी भावना के आधार पर संविधान सभा की अंतिम बैठक में, अध्यक्ष डॉ राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में, वंदे मातरम को राष्ट्रगान के समकक्ष सम्मान देते हुए राष्ट्रगीत घोषित किया गया।

श्री शाह ने कहा कि बीते दिन कांग्रेस के कई सदस्य पूछ रहे थे कि वंदे मातरम पर चर्चा क्यों की जा रही है और इसे राजनीतिक हथकंडा बता रहे थे। संसद में किसी मुद्दे पर चर्चा करने से हम नहीं डरते। संसद चलने दें तो हर विषय

पर चर्चा होगी। वंदे मातरम पर चर्चा से बचने की यह मानसिकता नई नहीं है। यह वंदे मातरम का 150वां वर्ष है और हमारे देश में किसी भी महान रचना के महत्वपूर्ण वर्ष को सम्मान दिया जाता है। जब वंदे मातरम के पचास वर्ष पूरे हुए, तब देश आजाद नहीं था। 1937 में इसकी स्वर्ण जयंती पर जवाहरलाल नेहरू ने इसे दो अंतरों में सीमित कर दिया। यह वंदे मातरम के महिमा मंडन को रोकने की शुरुआत थी और यही क्रम आगे तुष्टिकरण की नीति तक पहुंचा जिसने देश के विभाजन का मार्ग प्रशस्त किया। श्री शाह ने कहा कि उनके जैसे कई लोगों का मानना है कि यदि वंदे मातरम को सीमित करने का निर्णय न लिया जाता तो देश का विभाजन न होता। पचास वर्ष बाद, जब वंदे मातरम के सौ वर्ष पूरे हुए, तब इसके सम्मान की कोई बात ही नहीं हुई क्योंकि देश पर आपातकाल थोप दिया गया था। लाखों विपक्षी कार्यकर्ताओं और समाज सेवियों को जेल में बंद कर दिया गया। अखबारों पर ताले लगा दिए गए और आकाशवाणी पर कई कलाकारों की आवाजें बंद कर दी गईं। जब वंदे मातरम 100 वर्ष का हुआ, तब पूरा देश मानो एक बंदी शिविर बन गया था।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि आज वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने पर लोकसभा में चर्चा हुई, लेकिन कांग्रेस नेतृत्व के दोनों सदस्य अनुपस्थित रहे। जिस कांग्रेस के अधिवेशनों की शुरुआत कभी गुरुवर टैगोर जैसे लोगों के वंदे मातरम गाने से होती थी, आज वही कांग्रेस इस चर्चा से बचती है। पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर आज के कांग्रेस नेतृत्व तक वंदे मातरम का विरोध उनकी सोच में बना हुआ है। कांग्रेस की एक प्रमुख नेत्री ने कहा कि वंदे मातरम पर चर्चा की कोई आवश्यकता नहीं है। जिस गीत को महात्मा गांधी ने राष्ट्र की शुद्धतम आत्मा से जुड़ा बताया और जिसे बिपिन चंद्र पाल ने राष्ट्रधर्म की अभिव्यक्ति कहा, उसी वंदे मातरम को काटने का काम कांग्रेस ने किया। कांग्रेस सहित कई विपक्ष दलों एवं उनके नेताओं वंदे मातरम् का अनादर करते हैं जो निंदनीय है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी वंदे मातरम ने हमारे स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी और विश्व में भारत की राष्ट्रीय चेतना का परिचय कराया। श्यामजी कृष्ण वर्मा, मैडम भीकाजी कामा और वीर सावरकर ने जो भारत का त्रिवर्ण ध्वज बनाया था, उस पर स्वर्णिम अक्षरों में केवल एक ही शब्द अंकित था, वंदे मातरम। 1936 के बर्लिन ओलंपिक में गुलामी के कठिन काल में जब भारतीय हॉकी टीम को प्रेरणा की आवश्यकता थी, तब कोच ने पूरी टीम को एक पंक्ति में खड़ा कर भावपूर्ण स्वर में वंदे मातरम का उच्चारण कराया और टीम स्वर्ण पदक जीतकर लौटी।

श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की स्थापना सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना के साथ हुई। पार्टी का मूल विचार यह रहा है कि भारत अपनी मूल संस्कृति और मूल विचारों के आधार पर आगे बढ़े, न कि पश्चिमी संस्कृति की दिशा में बहके। इस संसद में एक समय वंदे मातरम का गान बंद करा दिया गया था। 1992 में भाजपा सांसद राम नाइक ने अल्प अवधि चर्चा के माध्यम से वंदे मातरम का गान पुनः शुरू करने का विषय उठाया। उस समय प्रतिपक्ष के नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने स्पष्ट रूप से लोकसभा अध्यक्ष से आग्रह किया कि संविधान सभा ने जिसे स्वीकार किया है उसका गान इस सदन में अवश्य होना चाहिए। इसके बाद लोकसभा ने सर्वसम्मति से वंदे मातरम के गान की पुनः शुरुआत की। उस समय भी कई सदस्य वंदे मातरम गाने से इनकार करते थे। श्री शाह ने कहा कि उन्होंने स्वयं देखा है कि कुछ सदस्य वंदे मातरम का गान शुरू होने से पहले ही सदन से बाहर चले जाते थे। आज कहा जा रहा है कि कांग्रेस पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं, लेकिन वे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि भारतीय जनता पार्टी का कोई भी सदस्य वंदे मातरम के गान के समय सम्मानपूर्वक खड़े होने में कभी पीछे नहीं हट सकता। कांग्रेस के जिन सदस्यों ने वंदे मातरम गाने से इनकार किया, उनके नाम वे सदन के पटल पर रखने वाले हैं और अनुरोध करते हैं कि वे इस चर्चा का हिस्सा बनाए जाएं ताकि देश को यह तथ्य ज्ञात हो सके।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की 130वीं जयंती पर डाक विभाग ने विशेष डाक टिकट जारी किया। आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर हर घर तिरंगा अभियान के दौरान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जनता से आग्रह किया कि तिरंगा फहराते समय वंदे मातरम का उद्घोष अवश्य किया जाए। वंदे मातरम के 150 वर्षों को भारत सरकार पूरे वर्ष भव्य रूप से मना रही है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इसकी रूपरेखा को अनुमोदित किया। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम निर्धारित किए गए हैं। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 नवंबर 2025 को भारत माता को पुष्पांजलि देकर इस वर्ष का शुभारंभ किया। इसका पहला चरण नवंबर में पूरा हुआ। दूसरा चरण जनवरी 2026 में, तीसरा अगस्त 2026 में और चौथा नवंबर 2026 में होगा। केंद्रीय सरकार ने स्मारक डाक टिकट

और स्मारक सिक्का जारी किया। उन्होंने बताया कि 75 वादकों द्वारा वंदे मातरम नाद एकम रूप अनेकम शीर्षक से विशेष प्रस्तुति तैयार की गई। 7 नवंबर को देशभर में सामूहिक वंदे मातरम का गान हुआ। इसकी डॉक्यूमेंट्री और प्रदर्शनी प्रत्येक जिला केंद्र और आवश्यकता अनुसार तहसील स्तर पर प्रदर्शित की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी को डिजिटल माध्यम से करोड़ों लोगों तक पहुंचाया जाएगा। आकाशवाणी, दूरदर्शन और एफएम चैनलों पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जा रहे हैं। प्रेस सूचना ब्यूरो द्वारा विभिन्न शहरों में चर्चाओं का आयोजन होगा। सभी भारतीय दूतावासों में वंदे मातरम आधारित सांस्कृतिक संध्याएं आयोजित की जाएंगी। वंदे मातरम सैल्यूट टू मदर अर्थ अभियान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम चल रहा है। राजमार्गों पर वंदे मातरम के इतिहास को दर्शाने वाले भित्ति चित्र लगाए जा रहे हैं। रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों पर एलईडी डिस्प्ले के माध्यम से घोषणाएं होंगी और वंदे मातरम तथा बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय पर पच्चीस एक मिनट की लघु फिल्में भी बनाई जा रही हैं।

श्री शाह ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले से अमृत काल के लिए पंचप्रण का आह्वान किया जिसमें विकसित भारत का लक्ष्य, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, देश की एकता और अखंडता की रक्षा और नागरिक कर्तव्य का विस्तार शामिल है। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर अमृत महोत्सव पूरे देश में मनाया गया। गांव-गांव में स्वतंत्रता संग्राम के नायकों को याद किया गया, अनेक अनदेखे योद्धाओं के स्मारक बनाए गए और युवाओं को 1857 से 1947 तक के संघर्ष से परिचित कराया गया। अमृत काल के संदर्भ में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संकल्प रखा कि आज़ादी की शताब्दी तक भारत हर क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनेगा। यह किसी एक व्यक्ति या दल का संकल्प नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का संकल्प है। दैवयोग से वंदे मातरम के 150वें वर्ष के साथ यह संकल्प और अधिक सशक्त होता है, क्योंकि वंदे मातरम ही राष्ट्रभक्ति को पुनः जागृत करने का माध्यम बनेगा। वंदे मातरम कभी कालातीत नहीं होगा। जिस समय इसकी रचना हुई थी, तब भी इसकी उतनी ही आवश्यकता थी जितनी आज है। स्वतंत्रता संग्राम में जिसने देश को एक किया, वही वंदे मातरम अमृत काल में देश को विकसित और महान बनाने का प्रेरक बनेगा। यह सदन का दायित्व है कि बच्चों और युवाओं के मन में वंदे मातरम की भावना को पुनः स्थापित किया जाए, उन्हें राष्ट्रभक्ति के इस उद्गार की शक्ति समझाई जाए और आने वाली पीढ़ी को वंदे मातरम के आदर्शों के अनुरूप राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रेरित किया जाए।

****